समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपासजिनराय।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथुअरि मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-जिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-जिन समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मुनिमन सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनों धार धरा।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष महीं॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चन्दन जल

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो भव-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सफेद चावल

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुकता फल की उनमान, पुञ्ज धरों प्यारे। चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पीले चावल

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम-कलंक हरे॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यों, कामबाणविध्वंसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

सफेद चिटकी

मन मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

पीली चिटकी

तम खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यों मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खैवत हों।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

फल

शुचि पक्क सरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥ चौबीसौं...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घं - पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ॥१॥

छन्द घत्तानन्द

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

छन्द पद्धरि

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ॥३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुतितन रसाल।
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद चंद तन दुति प्रकाश ॥४॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपूज्य ॥५॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टि करेत ॥६॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि छयकरेय।
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्ल दल्ल ॥७॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥८॥

छन्द घत्तानन्द

चौबीस जिनंदा आनंद-कंदा, पाप-निकंदा सुखकारी।
तिन पद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव-वंदा हितकारी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-चतुर्विशतिजिनेभ्यों महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै॥

इत्याशीर्वादः।